WLC15-1-2 HI

क्या परमेश्वर का अस्तित्व है? परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में बहस - प्रोग्राम 2

अनाऊंसर: आज द जॉन एन्करबर्ग शो में, क्या परमेश्वर अस्तित्व में है? हालही में किए गए प्यु सर्वे से प्रकट हुआ है, 5 में से 1 से भी ज्यादा अमरीकी अब खुद को नास्तिक समझते हैं/ एग्नोस्टीक या कोई खास नही समझते हैं, शायद आप खुद पूछ रहे हो, क्या परमेश्वर का अस्तित्व् है? कौनसे फिलोसोफिकल और साइंटिफिक बहस क्या हैं, जो दिखाए कि परमेश्वर का अस्तित्व है?

अनाऊंसर: डॉक्टर विल्यम लेन क्रे, जिन्हें बहुत से लोगों ने हमारी पीढ़ी के विख्यात मसीही फिलोसोफर के रूप में जाना है, और इन्होने बहुत से विख्यात नास्तिक से बहस की है, जो संसार के विख्यात यूनिवर्सिटी से पढ़े हैं, डॉक्टर क्रे के पास फिलोसोफी में पी एच डी है, बरमिंगहम इंग्लैंड साथ ही डॉक्टर ऑफ़ थियोलोजी डिग्री, म्युनिक की यूनिवर्सिटी से, हम आपको न्योता देते हैं कि विशेष प्रोग्राम में जुड़ जाए, द जॉन एन्करबर्ग शो में/

****

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: प्रोग्राम में स्वागत है, मैं हूँ जॉन एन्करबर्ग, आज हमारे साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद, मैं खुश हूँ कि आप यहाँ हैं और इस जानकारी को चूकना नही चाहते हैं, मेरे मेहमान हैं डॉक्टर विलियम लेन क्रेग, ये हमारे समय के सबसे अच्छे फिलोसोफ़ोर हैं, ये बहुत से विख्यात दोष निकालनेवालों के साथ विवाद करने की चर्चा में रहे हैं, जो हमारे संसार ए सबसे विख्यात यूनिवर्सिटी से पढ़े हैं/ बील मैं खुश हूँ कि आज आप यहाँ हैं, और बहुत से लोग विवाद करते हैं, विख्यात नास्तिक जो इस विषय पर चर्चा हैं, नास्तिक और मसीहियत का विरोध/ क्या परमेश्वर का अस्तित्व है, और किस तरह के सबूत हैं जिससे सोच सके कि परमेश्वर का अस्तित्व हैं, और आज मैं आपको बताना चाहता हूँ, हमारे दर्शकों को 5 अच्छे कारण कि परमेश्वर क्यों अस्तित्व में है/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: बहुत अच्छा, मैं सहमत हूँ जॉन, कि ये हायपोथेसेस कि परमेश्वर का अस्तित्व है,, ये हमें बड़े रूप में बताता है, मनुष्य के अनुभव के डाटा के बारे में/ उदाहरण के लिए, परमेश्वर ही सबसे अच्छा विवरण है, संसार की शुरुवात के बारे में, दूसरी बात, परमेश्वर सबसे अच्छा विवरण है संसार की बुद्धिमत्ता के जीवन के फाइन ट्यूनिंग के बारे में/ तीसरी बात, परमेश्वर सबसे अच्छा विवरण है, अच्छे नैतिक मूल्यों के बारे

में, और संसार के काम के बारे में, नंबर चार परमेश्वर सबसे अच्छा विवरण है, नासरत के यीशु के ऐतिहासिक सच्चाई के बारे में, और अंत में नंबर 5, परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप में जाना और अनुभव किया जा सकता है, एक साथ मैं सोचता हूँ कि ये एक सामर्थी और अद्‌भुत बात प्रकट करता है कि विश्वास करे कि परमेश्वर अस्तित्व में है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक हैं, नंबर एक से शुरू कीजिए, संसार की शुरुवात/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: आधुनिक फिजिक्स के बारे में एक अद्‌भुत बात तो ये है, वो ये है कि ये बायगोन के दिनों के विरुद्ध में है/ आधुनिक विज्ञान विश्वास करता है कि संसार अनंतकाल का नही है, भूतकाल में/ लेकिन इसकी शुरुवात है/ कुछ निश्चित समय पहले, आधुनिक एस्ट्रो-फिजिक्स में नियन्त्रण करनेवाली बात तो ये है परिपूर्णता में, कि ये संसार एक बिग बैंग से शुरु हुआ/ लगभग 14 बिलियन साल पहले/

और मैं सोचता हूँ कि बहुत से ले लोग इस थेयरी को नही समझते हैं, केवल ऐसा नही कि सारे तत्व और उर्जा, लेकिन शारीरिक जगह, और समय भी अस्तित्व में आया/ इस बिग बैंग के समय में, तो बिग बैंग दिखता है कि इस संसार की शुरुवात है, जो शून्य में से आई/ अब मुश्किल ये है, कि शून्य में से कुछ नही आता है/ ये कहना कि संसार बस ऐसे ही शून्य में से आया, ये तो जादू से भी बुरा होगा/ जब जादूगर टोपी में से खरगोश को निकालता है, तो वो तो जादुगर है, ये टोपी का कमाल नही है/ लेकिन नास्तिकता में हमें कहना होगा कि ये स्त्रर बिलकुल किसी चीज़ के न होते पर किसी शून्य से बाहर आया है/ जो माना जाता है, तो ये मेरे लिए व्यवहारिक दिखाई देता है, कि कहे कि इस संसार के लिए एक निश्चित कारण है/ जिसने इसे अस्तित्ब में लाया/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: आप के पास महान उदाहरण है/ जिसके बारे में आप चर्चा कर रहे हैं, गुब्बारे के बारे में/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: ये समझना बहुत महत्वपूर्ण है, कि बिग बैंग मॉडल में, ये थेयरी ऐसी नही कि भौतिक संसार बढ़कर पहले अस्तित्व रखनेवाला खाली स्थान नही हो जाएगा/ लेकिन इस मॉडल के अनुसार स्पेस और समय अपने आप इस बिग बैन में आस्तित्व में आए, और इसे देखने का सबसे अच्छा तरीका यही है, कल्पना करे कि एक गुब्बारा है, जहाँ उस गुब्बारे के उपर बटन लगाए गए हैं, अब बटन वहां चिपकाए गए हैं, वो हटते नही हैं, उस गुब्बारे की सतह पर/ लेकिन जैसे आप गुब्बारा फुलाते हैं, तो ये बटन के दुसरे से आगे और आगे जाते हैं, क्योंकि गुब्बारे की सतह बढती जा रही है/ अब गुब्बारे की सतह, तो बस हमारे 3 डायमेंशन स्पेस जैसे ही है/ जैसे स्पेस बढ़ता है, वैसे गैल्क्सी, आगे और आगे बढती जाती हैं/ अब इसका अद्‌भुत प्रभाव होता है,

जैसे हम समय में वापस इन बातों को देखते जाते हैं, तो ये करीब और करीब आते जाते हैं/ जब कि किसी जगह पर अनंत भूतकाल में, ये पूरा संसार मानो एक बिंदु जैसे था, उस के पहले ये सच में अस्तित्व में नही था, याने नियन्त्रण करनेवाले ये पैराडाइम इस कंटेम्पररी कोस्मोलोजी की, यही है कि संसार शून्य में से अस्तित्व में आया, लगभग 14 बिलियन साल पहले/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, और मैं सोचता हूँ कि ले लोग इसे लेते वेब से या जब साइटीफिक जरनल पढ़ते हैं तो इसे लेते हैं, यहाँ तक कि पॉप लिटरेचर से, और यही कि, साइंस के फिलोसोफर कहते हैं, बने रहिए क्यों कि सच में शून्य में से, याने ये शून्य तो सच में कुछ है/ और थेयरी इस बारे में नही कहती है, इसे समझाइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: देखिए ये तो बड़ी बात है कि विख्यात प्रेस और टेलीविजन शो में गलत तरह की जानकारी दी जाती है, इस संसार की शुरुवात के क्वानटम मैकेनिक्स के बारे में, ये कहता है कि क्वानटम मैकेनिक्स में, हम पा सकते हैं पार्टिकल्स जो क्वानटम वैक्यूम के कारण अस्तित्व आते रहते हैं, और इसलिए ये बात सच है, कि कुछ अस्तित्व में आ सकता है शून्य में से, तो अवश्य ही ये संसार बिना किसी कारण से, शून्य में से आ सकता है/ ये लोग ये बताने में चुक गए, कि ये क्वानटम वैक्यूम, फिजिक्स में ये नही है, कुछ नही है, ये वो नही जो लेमन सोचते हैं, क्वानटम वैक्यूम एक समुन्दर है, आक्रमक प्रभावी एक्टिविटी है, जिस पर फिजिक्स के नियम अधिकार करते हैं/ ये तो सच में पूरी तरह से शुन्य नही है/ याने यहाँ तक कि संसार के शुरू के स्थर में भी, इसके अस्तित्व के पहले कुछ सेकंड्स में, इसे विवरण के रूप में बताया गया क्वानटम मैकनिकल वैक्यूम, जो कि संसार की शुरुवात नही है, शून्य में से, और बात तो ये हकी ये क्वानटम वैक्यूम अनंत भूतकाल तक बना नही रहता/ इसकी एक शुरुवात है/ इसलिए हम इस सवाल में आते हैं,संसार की शुरुवात कहाँ पर हुई? किसने इस संसार को अस्तित्व में लाया?

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: परमेश्वर अस्तित्व में है इसके लिए ये अच्छा कारण क्यों है?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, ये शारीरिक संसार के लिए ये ट्रान्ससेनडन्ट कारण है, और जब हम इस पर गौर करते हैं कि किन बातों के कारण ये हुआ होगा, और इसके लिए बहुत से थियोलोजिक्ल एट्रिब्यूट दिखाई देते हैं/ उदाहरण के लिए, इसे तो बिना कारण से होना चाहिए, ये शारीरिक और भौतिक द्वारा न हो, क्योंकि इसने इस संसार में सारी बातों को बनाया है/ ये कुछ समय का न हो, बिना समय का,क्योंकि इसने समय भी बनाया, स्पेस के साथ ही/ इसलिए इसे बिना बदलाव का होना चाहिए/ इसे बहुत ही सामर्थी होना चाहिए कि इस

संसार को अस्तित्व में लेकर आए/ और इससे बढकर मैं इस पर बहस भी करूंगा कि ये तो जरुर कोई व्यक्ति ही होगा/ अब ऐसा क्यों है? देखिए केवल एक ही तरीका है कि कैसे इसे ले याने शुरू में कुछ समय का हो जिसने ये हमेशा का बिना समय का अनंतकाल का अस्तित्व रखा हो/ यदि ये कारण बिना व्यक्ति का होता, केवल मैकनिक्ली काम करनेवाली बात है, तो एक बार निश्चित परिस्थिति दी जाए, तो उसके परिणाम भी दिए जाने चाहिए/ यदि ये परिस्थिति हमेशा के लिए वहां है अनंतकाल से, तो उसके परिणाम भी हमेशा से होने चाहिए/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, आपके पास पानी को बर्फ बनाने का महान उदाहरण है/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, उदाहरण के लिए पानी ही लीजिए, पानी इसलिए बर्फ बनता है कि तापमान 0 डिग्री सेल्सियस से निचे जाता है, यदि ये तापमान अनंतकाल से 0 डिग्री से निचे है, तो पानी अनंतकाल से पूरी तरह जमा हो होता, ये असंभव होता कि पानी जमना शुरू हो/ कुछ निश्चित समय पहले/ तो कैसे हम शुरू से कुछ समय का प्रभाव पा सकते, हमेशा के अनंत कारण के लिए? मैं इसके लिए केवल एक ही जवाब देख सकता हूँ/ और वो ये है कि यदि कर्ण कोई व्यक्तिगत एजंट है, जिसके पास अपनी इच्छा की आज़ादी है, जो इसलिए ने प्रभाव को निर्माण कर सकता है, बिना किसी पहले से निश्चित करनेवाली शर्तों से/ उदाहरण के लिए जो मनुष्य अनंतकाल से बैठा है, अपनी इच्छा से खड़ा हो सकता है, इसलिए आपके पास नया प्रभाव होगा, जो अनंतकाल के कारण से आया है/ इसलिए हमें केवल ट्रान्ससेनडेंट कारण से संसार में नही लाया गया लेकिन एक व्यक्तिगत सृष्टिकर्ता है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ये सच में बहुत अद्भुत बात है, मैं दूसरे कारण पर जाना चाहता हूँ, परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में, संसार में जो बेचीदा क्रम हैं ये बुद्धिमान डिज़ाइनर के बारे में बताता है/ बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: वैज्ञानिकों ने एक दिन सोचा कि चाहे संसार की शुरू की स्थिति कोई भी हो, यदि थोडा समय और लक दे तो, आगे जाकर निश्चिय ही हमारे जैसे बुद्धिमान जीव जरुर आएगे, लेकिन इसके बजाए, पिछले 50 साल के लगभग, विज्ञान पूरी तरह से चौक गया है, कि बुद्धिमत्ता के जीवन का अस्तित्व, इस संसार में आधारित है, एक बेचीदा और नाज़ुक संतुलन पर/ शुरू की शर्तों पर, जो बिग बैंग में बताई गई है, सच में इस तरह दिखता है कि ये संसार अद्भुत रूप में ट्यून किया गया है बुद्धिमत्ता के जीवन के अस्तित्व के लिए, बिलकुल उस पल से, उसके शुरू होते ही/ और ये फाइन ट्यूनिंग तो अपने आप में पूरी तरह से समझ से परे है/ चलिए मैं आपको विचार देता हूँ इस फिने ट्यूनिंग का, चलिए कुछ नंबर को देखते हैं, कि आपको संभवनाए

बता सकूं, इतिहास में यदि हम सेकंड की गिनती करते हैं तो पुरे बिग बैंग के समय तक, ये है 10 टू डी 18 थ पावर है, 10 टू 18 पावर है पुरे संसार के इतिहास में, 10 के बाद में 18 शून्य हैं, बड़ी संख्या है, सब एटोमिक पार्टिकल्स इस पुरे संसार में, ये तो 10 टू द 80 पावर है,

और मन में इन नंबर के बारे में सोचिए, किये संसार जीवन की अनुमति दे, गुरुत्वाकर्षण की शक्ति, और कमजोर, और एटम, इसे फिने ट्यून किया जाना चाहिए, कि याने दस में से एक भाग,100 पावर तक/ ये कोस्मोलॉजिकल कांस्टेंट जो संसार के बढने को देखता है, ये फाइन ट्यून किया गया एक भाग 10 में से 120 पावर पर, ये चौकानेवाला है, ओक्सवर्ड यूनिवर्सिटी के रॉजर पिनरोज ने अनुमान लगाया कि शुरू के संसार की लो इंट्रोपी के अनुमानित ऑड्स यही है, जो केवल अकस्मात रूप में लिए गए हैं, ये तो एक है 10 टू द वार ऑफ़ 10 टू द पावर 123, ये संख्या तो समझ से इतनी बाहर है, इसे एस्ट्रोनोंमिकल कहना तो बहुत ही अजीबसा होगा/

और फाइन ट्यूनिंग के उदाहरण तो इतने अलग और इतने ज्यादा हैं, इन्हें फिजिल्क्स की भविष्य की उन्नति में गायब होना मुश्किल है/ फाइन ट्यूनिंग के लिए जरूरी है कि कोई किसी तरह से उसके अस्तित्व के बारे में विवरण दे/ और इस विषय के लिटरेचर में, इसके लिए सामान्य रूप में तीन संभव विवरण हैं, उन में से एक है शारीरिक जरूरत/ कि ये प्रकृति के नियम से हैं, इनका मूल्य होना ही होगा/ दूसरा तो केवल संजोग होगा, और तीसरा तो ये बुद्धिमत्ता की डिजाइन का प्रोडक्ट है/ किसी ने संसार को बनाया है कि इस में जीव हो/

समस्या ये है कि ये पहले दो पर्यायी विवरण, शारीरिक जरुर और संजोग, ये तो ऐसे ही संभव नही हैं, प्रकृति के नियम के बारे में कुछ नही जिसे इस तरह के निरंतर और उत्तमता के मूल्य उन में हो, और संजोग तो इतना दूर है कि उनका इस तरह से आना संभव नही है/ तो मैं सोचता हूँ कि सबसे व्यवहारिक विवरण यही है, बुद्धिमत्ता की डिजाइन का/ और बहुत से वैज्ञानिकों ने इसे सही माना है, उदाहरण के लिए, पॉल डेविस, जो विख्यात फिजिसीस्ट हैं इन्होने कहा मेरे साइंटिफिक काम में, मैं ज्यादा और ज्यादा मजबूती से विश्वास करता हूँ, कि ये भौतिक संसार एक साथ रखा गया है इतने अद्भुत रूप में, जिसे मैं केवल ऐसे ही हुआ ये स्वीकार नही कर सकता/ और रोबेर जैस्ट्रो जो नासा गैदर इंस्टीट्यूट फॉर स्पेस स्टडी के हेड हैं, उन्होंने कहा कि ये परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में बहुत ही सामर्थी सबूत है, जो कभी साइंस से आया हो/

तो हम इस पहले विवाद का सारांश इस तरह बता सकते हैं/

1. यदि संसार अक अस्तित्व इस तरह शुरू हुआ है, तो संसार की शुरुवात का एक कारण है/
2. संसार का अस्तिव रहा है/
3. इसलिए संसार की शुरुवात का एक कारण है/

हम दुसरे विवाद का सारांश इस तरह बता सकते हैं/

1. संसार की फाइन ट्यूनिंग तो एक तो शारीरिक जरूरत, संजोग या डिजाइन के कारण हुई/
2. ये तो शारीरिक जरूरत और संजोग से नही हुई है/
3. इसलिए ये डिजाइन के कारण है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, आपने कहा है कि तीसरा कारण है कि परमेश्वर के बारे में विश्वास करने के लिए ये संसार के नैतिक मूल्य के बारे में है, इसे बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: यदि परमेश्वर का अस्तिव नही है जॉन तो ये बहुत ही मुश्किल होगा कि व्यवहारिक स्थर जाने सही और गलत का, भले और बुरे का/ नास्तिकवाद में नैतिक मूल्य तो उत्पादन हुए हैं, बिओलोजिक्ल एवोलूशुन्स और सामजिक परिस्थिति से, माइकल रूस जो साइंस के नास्तिक फिलोसोफर थे, कैनडा से, इन्होने कहा की नैतिकता तो बायोलॉजिकल स्वीकृति है, मूल्य तो झूठे हैं, नैतिकता को केवल मदत करती है, बचाव के लिए और पुन:उत्पादन के लिए और इससे गहरा और कोई विवरण तो झूठा है/ नैचरीलिस्ट और नास्तिक विचारधारा, यही है कि संसार में कोई व्यवहारिक नैतिक मूल्य और काम नही हैं, मुश्किल तो ये है कि अनैतिक अनुभव है, जो व्यवहारिक नैतिक मूल्य और कामों के बारे में बताते हैं, जो ये हम पर जबरदस्ती करते हैं, ये विवश करनेवाले और सच्चे हैं, यहाँ तक कि रूस ने भी एक जगह पर, माना कि जो मनुष्य ये कहता है कि ये नैतिक रूप में स्वीकारणीय है कि छोटे बच्चे पर बलात्कार किया जाए/ ये उसी व्यक्ति के जितना गलत है जो कहता है कि 2 और 2 = 5 होते हैं, तो सवाल ये है कि सबसे उत्तम बुनियाद क्या है, इन व्यवहारिक नैतिक मूल्यों और काम के लिए, और सोचता हूँ कि इसका जवाब है, परमेश्वर में, यदि परमेश्वर का अस्तिव है तो हमारे पास एक उत्तम दृष्टिकोण की बुनियाद है सही और गलत और अच्छे और बुरे के लिए/ जो नास्तिकवाद नही दे सकता/

हम इस तीसरे विवाद का सारांश इस तरह बता सकते हैं :

1. यदि परमेश्वर का अस्तित्व नही है, तो व्यवहारिक नैतिक मूल्य और काम अस्तित्व में नही हैं/
2. व्यवहारिक नैतिक मूल्य और काम अस्तित्व में हैं/ जिसके कारण हम अनुमान लगा सकते हैं और ये सही है कि :
3. इसलिए परमेश्वर का अस्तित्व है/

मैंने देखा है कि ये परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में सबसे सामर्थी बहस है, क्योंकि विद्यार्थी इन बातों की सच्चाई को पहचानते हैं, उन्हें रिलेटीवीजम सिखाया गया है/ उनकी यूनिवर्सिटी क्लासेस में, उन्हें सिखाया गया कि यदि परमेश्वर नही है तो सब रिलेटीव हैं, यदि नैतिक मूल्य अस्तित्व में नही हैं/ लेकिन इसी समय जॉन, वो गहराई से समर्पित हैं, इस दूसरी बात के लिए कि व्यवहारिक नैतिक मूल्य अस्तित्व में हैं, वो नही चाहते हैं कि दोष निकालने के विचार से देखे/ वो मूल्यों को पारितोषिक देते हैं, जैसे सहते जाना, और खुला मन रखना और प्रेम, वो बहुत डरते हैं, कि जो उनके साथ सहमत नही होता उन पर दोष लगाए/ वो उसे नैतिक मूल्य के रूप में थामे रहते हैं/ तो सच में वो समर्पित हैं, इन दोनों बातों के सत्य के लिए/ लेकिन वो कभी भी इन दो और दो को साथ नही रखते और व्यवहारिक निष्कर्ष नई निकालते/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, बील आपने कहा है कि चौथा अच्छा कारण, परमेश्वर के अस्तित्व के लिए ये इतिहास सच्चाई, यीशु के जीवन, मृत्यु और जी उठने के बारे में, इसे बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, यीशु नासरी तो सब लेखों में बहुत ही अद्‌भुत व्यक्ति थे, जॉन/ नए नियम के इतिहासकार किसी तरह की गिनती पर पहुंचे हैं, कि ऐतिहासिक यीशु प्रकट हुआ असाधारण आलौकिक अधिकार के साथ/ ये अधिकार कि खड़े होकर कहे, परमेश्वर की जगह पर/ उसने दावा किया कि उसमें परमेश्वर का राज्य मनुष्य के इतिहास में आया है/ और उसके इस सच्चाई के दृष्य प्रकटीकरण थे, उसने सेवकाई की, चमत्कार करने की, और छुटकारा देने की, लेकिन उसके व्यक्तिगत दावे के बारे में सबसे अद्‌भुत बात तो उसका मुर्दों में से जी उठना था/ यदि यीशु सच में मुर्दों में से जी उठा, इसका अर्थ यही है वो वही था जिसका उसने दावा किया था/ और परमेश्वर ने लोगों के सामने वो दावे पुरे किए/ अब मैं सोचता हूँ कि बहुत से लोग सोचते हैं कि यीशु का जी उठना ऐसा है जिस पर विश्वास से भरोसा करते हैं, लेकिन मेरी डॉक्टरल पढाई में म्युनिक की यूनिवर्सिटी में, इस विषय में मैं इस बात को देखकर चौक गया, कि सच में 4 स्थापित सत्य हैं, जिसके साथ सहमत होते हैं, आजे के नए नियम के ज्यादातर विद्वान्, इसके बारे में मैं सोचता हूँ कि ये यीशु के जी उठने के द्वारा अच्छी तरह से बताया गया है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: वो क्या हैं?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: नम्बर एक, उसके क्रुसीकरण के बाद, यीशु नासरी को एक कब्र में रखा गया, यहूदी हाय कोर्ट के सदस्य के द्वारा जिसका नाम था, अर्मथया का यूसुफ/ दूसरी बात, वो कब्र बाद में खाली देखी गई, यीशु के कुछ स्त्री अनुयायियों के द्वारा, उसके क्रुसीकरण के अगले रविवार के दिन/ तीसरी बात, उसके बाद, कुछ लोगों ने और लोगों के समूह ने अलग अलग परिस्थिति में, अलग जगह पर, यीशु के प्रकटीकरण को देखा, मुर्दों में से जी उठा/ और नंबर चार पहले से बताए गए सारे विवरण के बावजूद, असली चेलों ने अचानक और इमानदारी ससे विश्वास किया, कि परमेश्वर ने यीशु को मुर्दों में से जिलाया है, अब दोनों सच्चाई पूरी तरह से मानी जाती हैं, आज के ज्यादातर नए नियम के इतिहासकार के द्वारा/ केवल एक ही सवाल है, उसे किस तरह से अच्छे से बताए? और मैं सहमत हूँ कि इन चार सत्य का सबसे अच्छा विवरण ये है, जो असली आँखों देखे गवाहों ने दिया था, खासकर परमेश्वर ने यीशु को मुर्दों में से जिलाया/

लूक जॉनसन जो नए नियम के विख्यात विद्वान् हैं, एमोरी यूनिवर्सिटी से, इन्होंने लिखा, किसी तरह की सामर्थी बदलाव का अनुभव किया गया, कि शुरू की मसीहियत के चलन को शुरू कर सके, और एन टी राईट जो विख्यात ब्रिटिश विद्वान् हैं, इन्होंने कहा कि इसलिए एक इतिहासकार के रूप में मैं नही बता सकता मसीहियत के उपर आने के बारे में, जब तक कि यीशु अपने पीछे खाली कब्र रखकर जी न उठा हो/

तो हम इस विवाद का सारांश इस तरह निकाल सकते हैं :

1. यीशु नासरी के बारे में चार स्थापित सत्य हैं, उसका सम्मान के साथ दफनाया जाना, उसकी खाली कब्र, बाद में उसका प्रकट होना, और चेलों का यीशु के जी उठने में विश्वास की शुरुवात/
2. सबसे अच्छा विवरण स के लिए तो हायपोथसेस है/ परमेश्वर ने यीशु को मुर्दों में से जिलाया/
3. ये हायपोथसेस कि परमेश्वर ने यीशु को मुर्दों में से जिलाया ये बताता है कि परमेश्वर का अस्तित्व है/
4. इसलिए परमेश्वर का अस्तित्व है/

/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, बील आपने कहा है कि पांचवा कारण है कि लोग परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में विश्वास करते हैं, ये तो परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत अनुभव है/ इसका क्या अर्थ है?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: ये पांचवा कारण तो सच में परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में विवाद नही है, लेकिन ये दावा है कि हम अनुभव कर सकते हैं कि परमेश्वर अस्तित्व में है, सभी विवादों से हटकर, केवल व्यक्तिगत रूप में उसका अनुभव पाने से/ बाइबल में लोग इसी तरह से प्रभु को जानते थे/ जैसे प्रोफेसर हीक ने कहा है, उनके लिए परमेश्वर मन के द्वारा स्वीकार किया गया कोई विचार नही है, लेकिन अनुभव की वास्तविकता है, जो उनके जीवन को महत्व देती है/ अब यदि यही केस है, तो सच में खतरा है कि परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में बहस करे, ये तो हमारा ध्यन भटकाएगा, स्वयं परमेश्वर से, हमें बहस पर गौर नही करना चाहिए/ कि हम अपने दिल में परमेश्वर जो हम से बातें करता है उसे सुनने में चुक जाए/ जो लोग सुन रहे हैं, उनके जीवन में परमेश्वर व्यक्तिगत वास्तविकता बन जाता है/ बाइबल प्रतिज्ञा करती है, परमेश्वर के निकट आए और वो आपके निकट आएगा/ इसलिए हमें केवल विवाद पर गौर नही करना चाहिए, हमें परमेश्वर के निकट आना चाहिए और उसे निहारना चाहिए/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जिन लोगों ने इसके बारे में पहले नही सोचा और अभी इस पर गौर कर रहे हैं, आप उन्हें क्या करने की सलाह देगे?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: मैं इन्हें प्रोत्साहित करता हूँ जो मैंने अविश्वासी के रूप में किया था, जब मैंने पहली बार ये संदेश सुना, पहले मैंने प्रार्थना शुरू की, मैं प्रोत्साहित करता हूँ कि रात को अपने बिस्तर के करीब घुटनों पर आए, और प्रभु से बातें करे, कहे प्रभु यदि तू है, तो खुद को मुझ पर प्रकट कर, मैं तुझे जानना चाहता हूँ, यदि तू हैं तो, और इस तरह की प्रार्थना में निरंतर बने रहिए/ दूसरी बात मैं उन्हें प्रोत्साहित करता हूँ कि नया नियम ले, और सुसमाचार में यीशु के जीवन को पढ़े/ और जैसे आप सुसमाचार में यीशु की इन कहानियों को पढ़ते हैं, तो खुद से पूछे/ ये मनुष्य कौन था? क्या वो सच में वो हो सकता हैं जिसका इसने दावा किया है? क्या वो सच में परमेश्वर ने अवतार लिया है कि मेरे पापों के लिए मरे कि मैं परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध में आ जाए/ मैं विश्वास करता हूँ कि यदि लोग इस मार्ग में बने रहे, तो ये उन्हें परमेश्वर के पास लाएगा कि मेरे जैसे ही परमेश्वर को पाए/

अब जो लोग इस मुद्दे पर आ चुके हैं, जहाँ वो सहमत हैं कि परमेश्वर अस्तित्व में है, और उसने खुद को यीशु में प्रकट किया है, और यीशु को मुर्दों में से जिलाया, कि दिखाए कि वो कौन है/ तो मैं उन्हें प्रोत्साहित करता हूँ कि अपने जीवन में समपर्ण करे, यीशु को प्रभु और उद्धारक स्वीकार करे, आप प्रभु के पास आकर कुछ इस तरह से

प्रार्थना कर सकते हैं, प्रभु मैं विश्वास करता हूँ कि तू सच में अस्तित्व में है, और तूने अपने आप को यीशु में प्रकट किया और उसे मुर्दों में से जीवित किया है/ और इस समय मैं सबसे उत्तम रूप में अपने जीवन में आने का न्योता देता हूँ, मेरे पापों को क्षमा कर, मेरे जीवन को बदल दे/ मुझे उस तरह का व्यक्ति बना जो तू चाहता है कि मैं बनूं/ मैं यीशु का चेला बनकर उसके पीछे चलना चाहता हूँ/ मेरा जीवन बदल दे/ मैं तुझ पर विश्वास करता हूँ कि तू ऐसा कर, आमीन/ और यदि वो इस तरह प्रार्थना करते हैं, परमेश्वर ये प्रार्थना सुनेगा, उनके जीवन में आकर उन्हें बदल देगा, भीतर से बाहर कि उन्हें उस तरह का व्यक्ति बनाए जो परमेश्वर चाहता है कि वो बने/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: दोस्तों, क्या अब आप यही करना चाहते हैं, अपने दिल क ई गहराई से, मेरी आशा है कि आप इसके बारे में सोचेगे, और किसी चीज़ को मार्ग में आने न दे, यदि परमेश्वर आप से बातें कर रहा है, आप महसूस करते हैं कि परमेश्वर आपके बातें कर रहा है, तो घुटनों पर आकर ये प्रार्थना कीजिए, और देखिए परमेश्वर आपके जीवन में क्या करता है/

अब, अगले हफ्ते, हम परमेश्वर के अस्तित्व के सबूत के बारे में, और हम बील से चर्चा करेगे, कि संसार का अस्तित्व ही मजबूत सबूत है परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में, आप चूकना नही चाहेगे, आशा है कि अप जुड़ जाएगे/

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाऊनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ाो एप

"घ्द्धठ्ठन्र् द्यदृ ठ्ठड़ड़ड्ढद्रद्य ख्ड्ढद्मद्वद्म क्ण्द्धत्द्मद्य" ऋ ख्ऋद्मण्दृध्र्.दृद्धढ़

@JAshow.org

क्दृद्रन्द्धत्ढ़ण्द्य 2015 ऋच्ड्ढक्ष्